



ॐ नमो लोका तथा ॥ ५ ॥

पद्महस्तावधनं ॥ आर्या
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ १ ॥

अमाद्यगुप्तसागरः अमृतं
माद्यपासिर्न ॥ अंस्वराव

पद्मापनिगर्तनार्थः ॥

वलोकनं धनं ॥ वंदुस्व

लाक्षस्वर्गसिद्धिर्गन्तव्यं

लाक्षगर्भोलिनमामि

शुद्धादि ॥ ५५५ ॥

मदिति सर्वसुखाधननहनाशुक्तं कांनन अमाद्यपासुलाक्षस्वर्गममास्तानलव
यत् ॥ अ० माद्यपासुलाक्षस्वर्गस्वरावास्तकाहं ॥ ननाकमलादय इवुमग्नदुःखा
इगाडहनं सुखावर्त्तायुतिद्याया अमाद्यपासकलेनाकादयामि ॥ नदनुकगसा
धनं ॥ दहिनहस्त आकाशधनु र्यमं धुलं ॥ वामहस्त आकाशधनु र्यमं धुलं ॥
कुंशांतिषं ॥ अं डालाहानस ॥ स्वकर्तुं शुद्धाधिस्तिर्न ॥ लोमोपौनौव ॥ वाम

कववृद्धांगुष्ठाधि॥ अं वरुणपवनहर्गाहं ॥ वज्राङ्गलिसमयाहं ॥ ॐ नमनवर्जा
ङ्गलिकानयन् ॥ नगाहं कावधर्पवञ्चुचिकवर्जविण्वं ॥ अं ज्वलवीनायस्वाहा ॥
नृङ्गनिल्यां अं जयायस्वाहा ॥ मध्यमाख्यां ॥ अं विजयायस्वाहा ॥ अनानिकीर्त्यां ॥
अं जयाय विजयायस्वाहा ॥ कनेष्टाख्यानिश ॥ अं पप्रहसाहं ॥ नृङ्गन्यादिन्यादिद्य
थाकर्मकनसूपर्यनपस्यन् ॥ ॐ निकनन्यास ॥ नरसोऽदीदयञ्जुकात्रवचन्द्रम

लो

२

द्वलं नडुपविदिः कावतपविननं ॥ ४४ पप्रहसाहं ॥ कानाधिष्टी नं नवसिक्ता
नं वस्मि विस्त्रुवं नंदसदिग्लाकधपुगत्वाञ्जुमाद्यपासलाकध्वनं पथ्यनं ॥
पुल्लवृद्धगनवस्मिहिः ॥ ४५ लिनेषु यावत्त्यां लाकधपुञ्जमाद्यपासलाकस्वनसमा
दस्यहृष्टा कषयन् ॥ ४६ वृद्धा ॥ ४७ पुष्यन्यासः ॥ अं जमाद्यपासलाकध्वन
मद्वलसर्वविद्यानुसन्दिहं ॥ ४८ अं जमाद्यपासलाकध्वनाय वज्रपुष्पनिष्ठस्वा

हा॥ मध्यास॥ ॐ नैलाकविजयाय नमः पाणिपासपनिहर्तुः हृदयं
 द्वाहा॥ मध्यास॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥ मध्यास॥ ॐ आ॥ नमः
 मृगालाय वज्रपुष्पपनिहर्तुः स्वाहा॥ थडाने॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥ मध्यास॥
 स्वाहा॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥ मध्यास॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥
 ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥ मध्यास॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥

ॐ
 ३

३

ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥ मध्यास॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥
 वायुस्वाहा॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥ मध्यास॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥
 पूर्व॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥ मध्यास॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥
 ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥ मध्यास॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥
 म॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥ मध्यास॥ ॐ आ॥ नमः पास॥ ॐ हृदयं स्वाहा॥

॥ उरुन ॥ ॥ न द्वाह वरु कुन ॥ ॥ अं आ वरु इ प ना न य ० अरुन ॥
 अं आः वरु पूय ना ना य ० ॥ ने अरुन ॥ ॥ अं आ वरु इ प ना ना य ० ॥ वा य ॥
 अं आः वरु गंध ना ना य ० ॥ इ अरुन ॥ ॥ न द्वाह वरु कु सा दि द्वा न ॥ अं आः
 वरु कु स ० ॥ पूर्व ॥ ॥ अं आः वरु पा ना य ० ॥ द्वा न ॥ ॥ अं आः
 वरु वरु ना य ० ॥ पश्चिम ॥ ॥ अं वरु वरु ना य ० ॥ उरुन ॥ ॥

न द्वाह वरु इ प ना ना य ० ॥ इ अरुन ॥ ॥ द्वा इ ग ला क पा ल ना दि ॥
 अं वरु ना ना य ० ॥ इ अरुन ॥ ॥ अं सर्व न था ग न सु ल लित न मी न न
 मा मि र ग व न् न द्वा वरु ना ॥ पश्चिम ॥ ॥ पश्चिम ॥ ॥ पश्चिम ॥
 वा द सु ला स्या ॥ इ अरुन ॥ ॥ इ अरुन ॥ ॥ इ अरुन ॥
 ध मा न सा ॥ अरुन ॥ ॥ अरुन ॥ ॥ अरुन ॥ ॥

ॐ नमो नल ज्ञयाय ॥ ॐ नमो आर्यावलोकितस्वनाय ॥ वाधिसत्त्वाय महात्
 षाय महाकायनिकाय न शथा ॥ ॐ नमो धर्मिल महासिल शुद्धसत्त्व ॥
 एन २ संरुन २ पद्मविहृषिनां तुलधन समनावलोकितस्वनाय ॐ नमोः इ
 ददस्वाहा ॥ ॥ नमो पापदसना समनाहनगुमादिसुदिगलाकध
 उमनिपतिना वृद्धातुगवेगावाधिसत्त्वाय ॥ अहमवनामाय किंचित् ॥

लो
 ५

कायवाप्रावाहिसर्ववृद्धवाधिसत्त्वः मातापितृर्बोद्धन्यासंगमं हृदन्मनिल
 शीतवृष मयापापकर्मकर्मकर्म मनुमादिनवातुवत् ॥ नमः सुवमकथपिदुल्ल
 तुल्लत्वा सर्ववृद्धवाधिसत्त्वस्तौनिकं अगयावनयाप्रवनयोपनिदमया ज्ञानम
 सनपनिदुदयामि ॥ ॥ वृणुवयमानावेमंदलीरुद्धादियाग ॥ १ ॥
 प्रथमनामसमाधिः शापज्ञागः ॥ नमो मन्दलनाशनामसमाधिवजामि ॥

मरुतुमेनिकनूमा मुदिनापका चतुवम विहना विहावा ॥ अंस्व लवधुदा सर्व
 धम्मोनांस्व लवधुदाहं ॥ अंशु न्यनां हानवदस्व लवास्काहं ॥ नत्वर्यका नक्षनि
 षक्त वायुमधु लधनां कारेनिलायना काकिन ॥ नत्सपनि नदा हव नकावधु
 ग्निमधु लुकि काधेन कावदा विन ॥ नत्पनिर्वका नपनिनिष्य नवा ननिमधु लः
 वगुन शेषु कवधुः पुक्कपना काकिन ॥ नत्पनिर्वका नपनिनिष्य नवा ननिमधु लः

लो
 ५

पुनशपिनवधुः पिनगिधु विकवजं चतुर्कोन सुसाहित ॥ नत्पनिर्वका ननिष्य
 नः सुफनत्वमयं शृंगशु मय न मधिवत्त्वमयं श्रीमत्या नल काव नाद लु विना
 जिर्न ॥ कटागा न चतुर्द्वान चतुर्गालुन एषितं चतुर्कोन वृत्तवृद्धानि वृहस
 धिषु चन्दार्कवज विङ्क पुहाना ज्ञ हान न विन ॥ चतुस्सु स मायुन पदुषा
 म एषितं वकुलिक कर्म सिषन पर्य न वजन त्व विन कृ ह सु ए ॥

महावक्त्रकर्मसिर्षपदुज्जिनिक्किनिजालुर्मोदिग्ल्हाजेनष्टेनल्लुक्कं. वामला
दिविरुषितं. हनिवहिसुसंस्तिगं ॥ जगन्नाम. मच्छलपकाग्रनपनिनगं. विष्णु
दलकमलः. अकात्रजं पृथु. ससिमधुलं ॥ ॥ गडुपनिडी ॥ काचनमनिप
णस्यनसुत्रधकिचनसमुहं. व्याफनहसुर्नविलावः ॥ नस्यनिनगस्त्वविजग
र्त्तनानालुक्कं विकचनालसुमवलाकयन्. तद्वचनगसुकलपनिनगमात्मा

लो
१

नरुगवन्नध्यात्वा ॥ हिमकनकाटिकिनध. वदागदहंसमत्रमूषद्विनष्टवर्ष
दणिनं ॥ कवृथाशीमवलाकनं शृगान. नसुपयुयासिगं अगिसा. नै सर्वलज
नसंपूर्णं सर्वलज्जधवर्जिनं. अकमुषगपसिवंनधनं. उग्रजटाभकटं अमृता
हकृत्. लणयनदिप. शुवर्धूमनिक. मूकवज्र. वेदुर्यसर्वनत्ता. शाहर्धुहृषि
न ॥ अमृतरुद्रं दज्जिनपथमहज्जनामृगणवन्वनर्दं. दुगियहृज्जुमात्मा

धनं. त्रितियरुजनपासुधनं. वरुथरुजनाहयनलधनि॥ वामपथमरुजन
 सुनालसहृणदलकमलधनं. कनविगनपियुधधनाववहाननसिकनर
 धदि. त्रितियरुजनपहृणपुसुकधनं. त्रितियरुजनपिणुलधनं. वरुथरुजन
 कर्मदलधनं॥ यवहरुणीशुमाद्यपासुलासुधनमात्मानलावयन॥ ॥
 एगवतासिनसि. दी३ कानात्यन. नकाहमयूनासुनकधर्ममात्मानन

ली
 ६

एगवतध्यायात्॥ ॥ नद्विहिरुगवेनाशुमाद्याकुसुनकवधुर्कुसु
 यकनधनवामकनपासुधन॥ १ ॥ एगवतिरुजिननानास्यामावामक
 नधुनसुनात्यन. दजिनकुनसुविकासुयाननानासुमालवतिशुहिनवयो
 वनाहिनकुवरासा॥ ॥ अग्नि. सुधनकुमानसुधुनोडलिपुना॥
 कनकवरासुधुनिकुमानसुपधानि॥ वामकजुविधम. कसुकलालकुनवान॥

न दाहचतुर्कोन ॥ पुष्पासूक्ष्मा पुष्पमालाचक्रधनि वामननकाना ॥ नेमूया
 धुयाः धुमवर्धः धुपकनसूनेलगाहि वामकनहस्तावायुवीदिपावामनालु
 जाः ज्ञान्यागंधानकागंधगयस्वर्जधनि वामननहजा ॥ न दाहपुर्वदानक
 लात्पातुवर्जाकुगः समपिनः जंकाजविजसंजानावर्जाकुसुमिनशुति ॥ इंकान
 विजसंहनादिकिनदानसंस्तिः नीलवर्धपलुअसुपुहस्तावावर्जधर्हृहृण ॥

लो

१०

वंकाजविजंनुनिष्यर्चकजस्तार्कसमपला ॥ हस्तालीशुवनागृहापस्थिमहा
 वसंस्तिर्नः ॥ हाकाजविजंनिर्धीनावर्जावगकुउचय ॥ घट्टासंगृहहस्तापा
 विजवर्धमहाशुति ॥ पद्मसुचंदर्विवचसुलपयर्वासुस्तिनः ॥ न दाहजुष्ट
 नचक्रः वनेपायाशुनेनावनावधवधना ॥ इन्द्रजवायांमहिषावृधार्क
 ॥ इन्द्रवनायमः ॥ पुनिव्यामकनावृद्धाधनसुपदना नागपासंसेष

रुद्र वृद्धी उद्दिष्टानि न वाहन पीता कुसंगदा धनं कुर्वेत् ॥ विदिद्भुवत्मानः नगा
 अग्नया द्यागन्धानकसुतकर्मजलधना अग्नीः ॥ नेमृत्युतः स्वावृष्टानिलस्व
 अद्भुतकधना नाक्रसाधिपा नेमृत्युः ॥ वायव्या मृगवाहनः नीलावाक्यनधना
 वायु ॥ ॐ नमो भूयस्व सुवृद्धाभी तद्विष्णुलकपालपासि- ॐ नमः ॥ ५५ ॥
 ॐ सर्वयकवकुपनिदहृष्टाय ध्याय ॥ ॐ नमः ॥ ५५ ॥

लो
 ११

सर्वरुद्रा समी द्रुयै लवयत् ॥ ॐ निर्मदलनाक्षी नाम समाधिः ॥ ५५ ॥
 ॐ नमो भूयस्व सुवृद्धाभी तद्विष्णुलकपालपासि- ॐ नमः ॥ ५५ ॥
 ॐ नमो भूयस्व सुवृद्धाभी तद्विष्णुलकपालपासि- ॐ नमः ॥ ५५ ॥
 ॐ नमो भूयस्व सुवृद्धाभी तद्विष्णुलकपालपासि- ॐ नमः ॥ ५५ ॥
 ॐ नमो भूयस्व सुवृद्धाभी तद्विष्णुलकपालपासि- ॐ नमः ॥ ५५ ॥
 ॐ नमो भूयस्व सुवृद्धाभी तद्विष्णुलकपालपासि- ॐ नमः ॥ ५५ ॥

हृद्दीर्घं हृद्दीर्घं हृद्दीर्घं हृद्दीर्घं ॥ मूलहृदयमंत्रः ॥ २ ॥ ॐ शुभाष्टपात्रादिः स्वाहा ॥ ला
 उपहृदयः ॥ ३ ॥ ॐ आर्यावलोकितस्वनाय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ पद्महस्ताय स्वाहा ॥ ५ ॥
 ॐ लावस्वनाय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ मनिपद्मं ॥ ७ ॥ ॐ आर्यावलोकितस्वनस्य मूलहृ
 दयः ॥ ८ ॥ ॐ शुभाष्टपात्रादिः स्वाहा ॥ मृगः ॥ ९ ॥ ॐ नानाय स्वाहा ॥
 कशः ॥ १० ॥ ॐ अहं केशः स्वाहा ॥ स्वः ॥ ११ ॥ ॐ सुधनकमानाय स्वाहा ॥ अग्निः ॥

ॐ आर्यावलोकितस्वनाय स्वाहा ॥ नेमः ॥ १२ ॥ ॐ अहं केशः स्वाहा ॥ वायुः ॥
 ॐ नानाय ॥ मृदः ॥ १३ ॥ ॐ विजयाय स्वाहा ॥ वैद्यः ॥ १४ ॥ ॐ अहं केशः स्वाहा ॥
 स्वाहा ॥ हृदयः ॥ १५ ॥ ॐ स्वावनक्षत्रं ॥ चन्द्रः ॥ १६ ॥ ॐ अहं केशः स्वाहा ॥
 हृदयः ॥ १७ ॥ ॐ अहं केशः स्वाहा ॥ नासाः ॥ १८ ॥ ॐ अहं केशः स्वाहा ॥ मनसि ॥
 ॐ सर्वानिर्वैस्वलिः ॥ सिनसि ॥ १९ ॥ ॐ अहं केशः स्वाहा ॥ सर्वाणि ॥ २० ॥

॥ॐ शुभाष्टमा तदि॥१॥

[illegible]

१४